मराठी स्त्री लोकगीतों में प्रकट होती सामुदायिक सद्भावना

एस.वाय. मेश्राम[१], ए.डी. फुलझेले[२], आर.एच. मेश्राम[३]

[१]इतिहास विभाग, रा.तु.म. नागपूर विश्वविद्यालय, नागपूर, महाराष्ट्र (भारत)

[२]इतिहास विभाग, डॉ. आंबेडकर महाविद्यालय, दीक्षाभूमी, नागपूर, महाराष्ट्र (भारत)

[३]रा.तु.म. नागपूर विश्वविद्यालय, नागपूर, महाराष्ट्र (भारत)

meshramsangita33@gmail.com

सारांश

किसी भी संस्कृति की जड़े उस की लोक संस्कृति में होती है। लोक परंपरा के अनेक अवशेष संस्कृति के इस प्रगत अवस्था में भी विद्यमान होते हैं। लोक संस्कृति में जनसाधारणद्वारालोकसाहित्य का निर्माण अनायसही किया जाता है। इस कारण यह अनौपचारिक रूप में नजर आता है। लोक संस्कृति मेंलोकसाहित्य कीमौखिक परंपरा में रूढी परंपरा, विधि संस्कार, धार्मिक परिस्थिति व प्रभाव, राजनितिक कालावधी, सामाजिक व्यवस्था इत्यादि विषयों की अध्ययन पूरक सामग्री उपलब्ध होती है। मराठी लोक साहित्य में स्त्री गीतों की परंपरा अति प्राचीन रही है। इस विपुल संपदा को मराठी साहित्यकारों द्वारा अपौरुषेय कहां जाता है। क्योंकि इसकी रचना स्त्रियों ने अपनी भाव भावना, इच्छा–आकांक्षा और सुख–दु:खों के निचोड़ के रूप में की है। यह स्त्रीवादी साहित्य सांस्कृतिक एवं सामाजिक इतिहास के संदर्भ में अति महत्वपूर्ण स्त्रोत हो सकते। संसारी जीवन के अनेक पहलुओं के साथ महिलाओं ने अपनी रचना में सामुदायिक संप्रदाय की भावना का प्रगल्भता से प्रदर्शन किया है, जो भारतीय गंगाजमनी संस्कृति का महत्व एवं सांस्कृतिक आदान–प्रदान को समझने में मदद करती है।

प्रमुख शब्द : *मराठी लोकगीत, लोक साहित्य की परंपरा, सामाजिक एवं धार्मिक परिवेश, गंगाजमनी संस्कृति का मिलाफ, जनसाधारण कासहजीवन, सामुदायिक सद्भावना*

संशोधन प्रविधि

ऐतिहासिक संशोधन प्रविधि का अवलंब कर उपलब्ध साहित्य का शास्त्रिय दृष्टि से परीक्षण करके निष्कर्ष प्राप्त किया गया है। मूल्यांकन किया गया है।

गृहित तत्व

मराठी लोकसाहित्य में स्त्रियों के गीत तत्कालीनऐतिहासिक, राजकीय, सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थिति के संदर्भ में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। समाज इतिहास के दृष्टिकोन सेयह मौखिक परंपरा उपयुक्त समझी जा सकती है।

प्रस्तावना

भारत में प्राचीन काल से लोक गीतों की समृद्ध और विविध तथा विभिन्न परम्पराऐं रही है। प्राचीन काल से प्रचलित गाथा यह लोकगीत का एक रूप है।ऐतरेय ब्राह्मण में बलिदान देने वाले राजाओं की प्रशंसा करने वाली भी कई गाथाए हैं। जैन और बौद्ध साहित्य में भी गाथा पाई जाती है। धम्मपद और थेरीगाथा को उदाहरण के रूप में उद्धृत किया जा सकता है।भारत के विभिन्न राज्यों में लोकगीत आज भी गाए जाते हैं, जो प्रदेश की लोकसंस्कृति को दर्शाते हैं। हर राज्य के लोकगीतों में कई विशिष्ट प्रकारों की विशेषताएँ है।जन्म, विवाह और मृत्यु के अवसरों पर किए जाने वाले संस्कारों पर आधारित लोकगीतों की परंपरा भारत के विभिन्न हिस्सों में प्रचलित है। विभिन्न प्रकार के लोकगीत जैसे अनुष्ठान गीत, ऋतु गीत, श्रम गीत, नृत्य गीत, विभिन्न त्योहारों पर गाए जाने वाले गीत, जाति–व्यवसाय के गीत हर जगह बहुतायत में पाए जाते हैं। भारत के प्रत्येक राज्य के लोकगीतों में कुछ विशेषताएं हैं, जो किसी विशेष क्षेत्र की क्षेत्रीय संस्कृति को दर्शाती है।जिस प्रकार असम का बिहूगीत, बिहार के सोहाग गीत,उत्तर प्रदेश के विवाहगीत, पंजाब की लोकगीतों में गाए जाने वाली प्रेम कथाएं,आदिवासियों के प्रकृति पूजा गीत अपनी प्रादेशिक विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध है। ऐसी ही कुछ विशेषताएँ महाराष्ट्र में गाये जाने वाले लोकगीतों में भी है।

मराठी लोकसाहित्य में लोकगीतों की एक लंबी और प्राचीन परंपरा में स्त्री गीतों की संख्या ज्यादा है। पत्थर की चक्की पर अनाज पीसने का कठिन काम

करने वाली सर्वसाधारण स्त्रियों ने इन गीतों की रचना की है। अपनी घर गृहस्थी के लिए दिनरात श्रम करने वाली मराठी संस्कृति की नारियों ने अपने सुखदु:ख, अपनी इच्छाएं, रिश्तेनाते इसमें पिरोए हैं। इन सेतत्कालीन स्त्रियों का सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन समझने में मदद होती है। साहित्यिक मूल्य रखने वाले इस लोक साहित्य का उपयोग समाज इतिहास के क्षेत्र में भी हो सकता है।इन लोकगीतों के माध्यम से तत्कालीन महाराष्ट्र का राजनितिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिवेश समझने में मदद होती है।

इसवी सन१५२६ मे बाबरने पानिपत की पहिली लढाई मे जीत हासिल की, जिसके कारण हिंदुस्तान मे मुसलमान सत्ता स्थिर, दृढमूल हो गई। हिंदू और मुस्लिम संस्कृती के संबंधोंमे नजदीकी आ गई। विचारों का आदानप्रदान हुआ । एक तरह का सलोखा स्थापित हुआ।सांप्रदायिक सहिष्णुता का यह संबंध अंग्रेजों के आगमन तक कायम रहा। अंग्रेजो की'बांटो और राज करो'नीती के तहत इस भाईचारे को तोडने की कोशिश सर्वविदित है।

महाराष्ट्र की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि/धरोहर

महाराष्ट्र की भूमि पर राज करनेवाले प्रसिद्ध शासकों की श्रृंखला मे क्रमवार सम्राट अशोक, शालिवाहन,चालुक्य, राष्ट्रकूट, यादव इनका समावेश हे। यादवराज्य अल्लाउद्दीन द्वारा नष्ट किया गया। जो१३४७ तक सुलतान राज्य कहलाया गया। उसके बाद बहामनी राज्य की स्थापना हुई। बहामनी राज्य के विघटन के बाद मुगलों का शासन शुरूहो गया।भारत में महाराष्ट्र की ऐसी ऐतिहासिक राजनितिक काल हिंदू संस्कृति और मुस्लिम संस्कृती को आमने–सामने ला खडा कर दिया। भारत में इस्लाम धर्म के आगमन के कारण जो परिणाम हुए थे। उनमे महत्त्वपूर्ण परिणाम यह था कि हिन्दू और मुसलमानों ने एक दुसरे के धार्मिक विचारों को अपनाया, सम्मान दिया। मुसलमान शासकों के कारण साधारण जनता मे सांस्कृतिक लेनदेन होना स्वाभाविक था।

मराठी लोकगीतों की रचना ग्राम संस्कृति की स्त्रियों ने अपने जीवन अनुभव के आधार पर की है। पुरानी ग्राम संस्कृति में गांव एक स्वयंसिद्ध संकाय के रूप में कार्य करते थे। भारतीय समाज जाति व्यवस्थापर आधारित था। मराठी संस्कृति भी इसका अपवाद नहीं थी, स्तरीकृत व्यवस्था होने के बावजूद स्त्रियों ने अपने गीतों में सहज सहवास और सबधर्म समभाव को दर्शाया है। पुरुष प्रधान संस्कृति के बंधनों में रहकर भी स्त्रियों ने अपनी प्रगल्भता, सद्भावना और विचारों की उच्चता को अपने गीतों के माध्यमसेप्रदर्शित किया है।

विट्ठल भक्ति और वारकरी संप्रदाय मराठी संस्कृति की विशेषता है। मराठी लोकगीतों में इन पर आधारित अनेक लोकगीत प्रसिद्ध है। स्त्रियों के धार्मिक जीवन में पंढरीकी यात्रा, भजन कीर्तन, संत सहवास, व्रतउत्सव, इत्यादि का महत्व लोकगीतों में से प्रदर्शित होता है। इसके साथ साथ मराठी स्त्रियों के लोकगीतोमें जैन, बौद्ध, पारसी और मुसलमान धर्म के उल्लेख भी आते हैं। उन्होंने अपने धार्मिक परंपराओं का प्रामाणिकता से पालन करते हुए भी मानवता का धर्म सबसे बड़ा है, यह अपने विचारों से साबित किया है और इसका प्रमाण इन गीतों में मिलता है।

लोकगीतों में प्रदर्शित हिंदूमुस्लिम सहजीवन

भारतीय संस्कृति में जन्म से जुड़े रिश्तो की तरह, मन से जुड़े रिश्तो को भी इमान के साथ निभाने की परंपरा रही है।हर पारिवारिक इकाई में इसकी शिक्षा भी दी जाती है। इतिहास में ऐसे कई रिश्तो के उदाहरण दिए जाते हैं। हिंदू रानी कर्मावती ने मुगल बादशाहअकबर को राखी भेजकर धर्मबंधु बनाया था, ऐसा कहा जाता है। इसी तरह का उदाहरण इन पंक्तियों में मिलता है।

मानियाला भाऊ, जातीचा मुसलमान
सख्या भावा परीस,त्याचं आहे ग इमान
दरसाल येतो, बहिणीला आठवून
जातीचा मुसलमान,प्रेमासाठी
मानीयला भाऊ, जातीचा मुसलमान
दिवाळी चोळी,घरी आला घेऊन
(सानेगुरुजी, २०११ पृ. ३६)

उपरोक्त पंक्तियों में अपनी हिंदूधर्मकीबहन के लिए मुसलमान भाई दिवाली पर साड़ीचोली लेकर आता है। हिंदू संस्कृति में विवाहिता बहन को दिवाली में भाई द्वारा साड़ीचोली उपहार में दी जाती है। यहां गाने वाली स्त्री, अपने मुसलमान भाई के ईमान को, उसके अपनी बहन के प्रति प्रेम को गीतों में गा कर सम्मान दे रही हैं।

भाई–बहन के पवित्र रिश्ते की तरह ही मैत्री का संबंध सदा से सम्मानित रहा है। इस रिश्ते में ऊंच–नीच,जात–पात या धर्म की दीवार कभी आडे नहीं आसकती। इसका सुंदर उदाहरण लोकगीतों में मिलता है। जिससे मराठी स्त्रियों ने अपने गीतों में गाया हुआ धार्मिक सद्भाव भी समझने को मदत होती है।

तुझा माझा भाऊपणा, हाय पराया जातीचा
तुझा माझा भोजनाला, हांय अंतर ईतीचा
(इंगोले क., २००४, पृ. २१४)

समाज में प्रचलित जाति व्यवस्था मैं जातियता का पालन किया जाता था। एक पंक्ति में उंचिजाति के लागों के साथ निचले जाति के लोग नहीं बैठ सकते थे। सहभोजन के कार्यक्रम में अपनी प्रिय सखी के साथ एक पंक्ति में बैठने को नहीं मिलने का दु:ख उपरोक्त पंक्तियों में दिखाई देता है। किंतु मित्रता का यह रिश्ता इन बंधनों से ज्यादा मजबूत है यह बताने के लिए गाने वाली कहती है। अपनी गहरी मित्रता के कारण मेरी मराठी भाषा पर तेरी हिंदी भाषा का असर इतना है कि अपनी भाषा भूलने लगी हूं।

तुझा माझा भाऊपणा,तु ग मुसलमानाची मैना
तुझ्या संगतीन,बोली मराठी येईना
(इंगोले क. , २००४, पृ. २१४)

स्त्रियों ने अपने गीतों में केवल रिश्तो में पनपती धार्मिक सद्भावना को ही नहीं दर्शाया है, उसके साथ साथ एक दूसरे के धर्म का सम्मान भी किया है। जो इन पंक्तियों में उजागर होता है।

सई बहिना जोडू मुसलमाननि सारजा
कपाळना कुंकू तीन्हा रामनि वरजा
(Foundation, २०२०)

हिंदू संस्कृति में विवाहित स्त्रियों के माथे पर लगने वाले कुमकुम का अतिशय महत्व होता है। किंतु मुसलमान धर्म में माथे पर तिलक नहीं लगाया जाता। दोनों ही धर्म के रिवाजों में अपनी अपनी श्रद्धा और मान्यताएं हैं। जिसका पालन करना व्यक्ति का कर्तव्य है। ऐसे तात्विक विचार मराठी स्त्रीगीतों में प्रदर्शित होते हैं। धर्म कोई भी हो, ईश्वर का रूप कोई भी हो श्रद्धा पवित्र होती है और उसका सम्मान करना चाहिए। ऐसी विचारों की प्रगल्भता इन अनपढ़ स्त्रियों की रचना में दिखाई देती है।उपरोक्त गीत में यह कहा गया है कि मुसलमान होने के कारण उसके माथे पर तिलक नहीं है। क्योंकि वह उसके धर्म की मान्यता है। इससे मेरे और उसके अपने आराध्य के प्रति श्रद्धा में,भक्ति में कोई अंतर नहीं है।

लोकगीतों में प्रतित होने वाला सांस्कृतिक प्रभाव

मराठी लोकगीतों में छलकने वाला यह धार्मिक सहिष्णुता का भाव मराठी प्रांत में रहने वाली मुस्लिम स्त्रियोके गीत में भी दिखाई देता है। जिससे सांस्कृतिक लेनदेन समझने में मदद होती है। छोटे बच्चों को किसी की बुरी नजर नुकसान करती है, ऐसी धारणा महाराष्ट्र के हर प्रांत के लोकगीतों मे मिलती है।छोटे बच्चों की बुरी नजर उतारने के लिए नारियल या नींबू का उतारा किया जाता है।यहा मुसलमान धर्म की माँ अपने मराठी पडोसन को कहती है।

शेजी का ताना मेरे ताने बराबर
नींबू–नारळ उतारिते दोनोंपर
(जगदाळे क. , २००४, पृ.६३)

यहा ममता की सहज भावना दिखती है, जो हिंदू–मुसलमान भेद नही जानती। उपरोक्त पंक्तियाँ विभिन्न संस्कृती का आपस मे होनेवाला मिलाफ दिखाती है। यह संस्कृतिसंगम महाराष्ट्र के रितीरिवाज को आपनाने वाले इन मार्मिक शब्दोंमे दिखाई देता है।

दसरा–दिवाली में भाई था पुणे में
बहना के लिए साड़ी चोली
लाया घोड़े को जिनमें (जगदाळे, पृ. १६१)

दसरा–दिवाली जैसे त्योहारों का महत्व जानते हुए गाने वाली कहती है, दिवाली के महीनों में भाई पुणे से अपनी बहन के लिए साड़ी–चोली घोड़े की जीन में रखकर लाया।शायद अपने हिंदू मित्रों को दसरा–दिवाली की त्योहारों में अपनी बहनों के लिए साड़ी खरीदते देख उसके भाई ने भी इस प्रथा का पालन किया हो।लोकगीतों में जहां मराठी मुस्लिम बहन भाई के दिवाली त्योहार में साड़ी लाने पर आनंदित है वही रूढ़ीवादी मराठी संस्कृति की नारी अपने आराध्य लोकदेव विट्ठल से रोजे रखवाती है।

जेवू वाढीते रुक्मिना, जेव मनता जेवना
येड्या लोकानला कळंना

याला रोजाचा महिना, विठ्ठल कोमट्यला
(भोसले(संपा.), २००५ पृ. २३०)

धर्म कोई भी हो, ग्राम संस्कृती मे रहनेवाली सर्वसाधारण स्त्री की जीवनकथा लोकगीतो मे एकसमान दिखायी देती है।जैसे की अपनी घर गृहस्थी के कार्य में सुरज उगने से पहले लग जाना, आधी रात तक जागकर कुटुंब के जरूरतों का ध्यान रखना। पुरुषप्रधान संस्कृती के अधीन हो कर रहना और पत्थर की चक्की पर अनाज पिसते हुए अपनी भावनाओं को गानों के जरिए प्रदर्शित करना।लोकगीतपारंपारिक स्त्रियों के जीवन का चित्रण करते हैं। इन गानों से तत्कालीन लोकजीवन में हिंदू एवं मुसलमान धर्मीयों द्वारा निभाई जाने वाली सहिष्णुता व सद्भावना समझने में मदद होती है। महाराष्ट्र में स्त्रियों के लोकगीतों में 'ओवी' सबसे ज्यादा प्रसिद्ध है। सुबह तड़के आटा पीसते हुए मराठी औरतें गाने की पहली पंक्तियाँ भगवान को समर्पित करते हुए कहती हैं, सारे संसार के रक्षक, पालक भगवान को मेरी पहली ओवी समर्पित है।

पहिली माझी ओवी जगाच्या पालका
रक्षिता बालका देवराया (साने, पृ. २९७)

वही मराठी– मुसलमान स्त्री कहती है, मुझे दुनिया में लाने वाले अल्लाह मेरी रक्षा तुझे ही करनी है।

पहली मेरी ववी गाती अल्लाह तुझे
दुनिया में डाला मुझे अब निभाने की फिख्र तुझे
(जगदाळे, पृ. ११२)

यहां दोनों की अपने अपने ईश्वर के प्रति भावना समान है। फर्क केवल शब्दों का है। मराठी संस्कृति में ओवी की अपनी एक सांस्कृतिक विशेषता है। यहां ओवी गानेवाली का धर्म, भाषा, ईश्वर का स्वरूप भी भिन्न है परंतु प्रादेशिक प्रभाव दिखाई देता है।जो सामुदायिक साहचर्य को दिखाता है। 'सर्वा भूति परमेश्वर' मानने वाली हिंदू संस्कृति में मराठी स्त्री का यह कहना उचित लगता है।

सकाळी उठूनी राम नाम घोकावा
धरणीमाते वरी मग पाऊल टाकावा
(जगदाळे, पृ. ११२)

पृथ्वी को माता का दर्जा देना और सुबह सबसे पहले भगवान का नाम लेकर दिन की सुरुवात करना भारतीय संस्कृती की सीख है।परंतु मराठी परिवेश मे जीवनव्यापन करने वाली मराठी–मुस्लिम नारी भी अपने ईश्वर के साथ साथ धरती माँ का आदर करते हुए दिखाई देती है। जो दो संस्कृतीयोंके आपसी तालमेल को प्रदर्शित करता है।

सुबह के वक्त अल्लाह का नाम लेना
फिर पाऊं देना धरती मां पर (जगदाळे, पृ. ११३)

एक ही परिवेश मे रहने के कारण मित्रता, रिश्तो मे घनिष्ठता स्वाभाविक होती है। जहां जन्मे, परवरिश हुई उस प्रदेश को अपना मानना सहज होता है।वहां का रहनसहन, खानपान, पहनना ओढना, सणत्यौंहार सब अपने से होते हैं। इसका उत्कृष्ट उदाहरण मराठी मुस्लिम स्त्रियों के गीतों में मिलता है। इस्लाम धर्म में सलवार कुर्ता और दुपट्टा या ओढ़नी ऐसी वेशभूषा स्त्रियों की होती है। महाराष्ट्र की पारंपरिक स्त्रियों के वस्त्रों में नववारी, साड़ी चोली का चलन सदियों से चलता आया है।आज भी यह कायम है। मराठा कालीन और पेशवेकालीन पुरुषों के वस्त्रोंपर मुगल वस्त्रों का प्रभाव सहज दिखाई देता है। वैसे ही मराठी मुस्लिम ओवी गाने वाली स्त्री ने इस सांस्कृतिक प्रभाव को अपने शब्दों से प्रदर्शित किया है। जो सांस्कृतिक आदान–प्रदान का उत्कृष्ट उदाहरण है।

सुबु को उठके खुला दरवाजा माडी का
बीबी फातिमा का लाल पदर साड़ी का
(जगदाळे, पृ. ११३)

सुबह के पवित्र वातावरण में पैगंबर की बेटी फातिमा बीवी को याद करने वाली यह साधारण स्त्री बीबी फातिमा की साड़ी का पदर लाल है,ऐसा सहजता से कह जाती है। सलवार कुर्ता पहनने वाली पैगंबर की लाडली इस संस्कृति समन्वय में साड़ी में नजर आती हैं। ऐसे ही बाहर से आई सभ्यताओं को अपना बनाकर साथ ले चलने की हिंदू संस्कृति की प्राचीन परंपरा का निर्वाह प्रामाणिकता से करने वाली मराठी स्त्रियों की सहज वृत्ति भी प्रकट होती है।

नागपंचमी का त्योहार महाराष्ट्र के हर प्रांत में मनाया जाता है। पुराने काल में लड़कियों कीशादी छोटी उम्र में की जाती थी। उन्हें त्योहारों के बहाने मायके आने का मौका मिलता था। भाई अपनी बहनों को उनके ससुराल से माता पिता के घर लाते थे ।सावन–भाद्रपद के महीने में नीम के पेड़ पर झूले टांग कर नवविवाहिता और कुमारीका कन्याएं झूलती थी, गाने गाती थी।पुरुष प्रधान संस्कृति में सामाजिक बंधनों के जोरखंडों में बंधी स्त्रियों के लिए यह कुछ पल

सुकून भरे होते थे। यहां नागपंचमी की पूजा के लिए अपनी सखियों को आवाज देते हुए मराठी स्त्री कहती है।

चल ग सये वारुळाला, नागोबाला पूजायाला
हळद–कुंकू वाहायला, ताज्या लाह्या वेचायाला
या ग या ग गडयिनी या ग या ग मैतरिणी
तेल्या तांबुळयाच्या बाई, वाण्या बामणाच्या बाई
(बाबर, मराठीतील स्त्री स्त्रीधन, १९७३ पृ.८१)

उपरोक्त पंक्तियों में गाना गाने वाली स्त्री अपनी अलग अलग जातिधर्म की सखियों को उनके जातिवाचक शब्दों से आवाज दे रही है।यहां उल्लेखित तंबोली यह शब्द पान का व्यवसाय करने वाली जमात के लिए प्रयोग किया जाता था। यह व्यवसायिक ज्यादातरमुसलमान धर्म के होते थे। इन पंक्तियों में धर्म कोई भी हो, खुशी के उत्सव मिलजुल कर मनाने की वृत्ति और सामुदायिक सहजीवन की भावना प्रकट होती है। इसी प्रकार नीचे दी गई पंक्तियों से यह कह सकते हैं की मराठी मुल्क में रहने वाली मुसलमान स्त्री को हिंदू पंचांग के मृग एवम् रोहिणी नक्षत्र का और नागपंचमी में पेड़ों पर बंधे जाने वाले झूलों का महत्व,दोनों ही का ज्ञान है।

ऐसा पानी पड़ता मिरूग और रोहिणी का
झूला झूलता भायाऔर भयनों का (जगदाळे, पृ.१६१)

भारतीय संस्कृति मे विद्वान पंडितों का स्थान ऊंचा होता है। उनके ज्ञान के विद्वता का सम्मान किया जाता है । इस संस्कृति विशेष को ध्यान में रखकर नीचे दी हुई पंक्तियों में कहां गया है,

मेरे अंगना में तांबे के रांजन, पानी पिएंगे काशी के बम्मन
मेरे जन्नी मां के ला (जगदाळे, पृ. १५६)

इन पंक्तियों में अपने भाई की तारीफ करने के लिए काशी के पंडितों का उल्लेख किया है, जो तांबे के रांजन में पानी पीते हैं अर्थात उनका स्थान ऊंचा है,वे पूजनीय होते हैं।

महाराष्ट्र में बेहतरीन कपड़ों की कला सातवाहन काल से ही प्रसिद्ध है। पैठण के कारीगरों द्वारा तैयार की गई सोनेचांदी के धागों की रेशमी पैठणी और कपास के उत्कृष्ट धागों से बुनी जाने वाली चंद्रकला महाराष्ट्र के सांस्कृतिक जीवन में अपना अलग स्थान रखती है। पूर्णत: भारतीय कहलाने वाले इन वस्त्रों पर बाहर से आई मुगल कला का प्रभाव हुआ है। अर्थात हिंदू और मुस्लिम कलाओं का संगम वस्त्रकला में दिखता है। इस तथ्य को ध्यान में रखकर अगली पंक्तियों में कहा गया है कि,

काली चंद्रकळा गंगा जमनी त्याची घडी
बंधूजी राजसा शेजारी मारवाडी
(बाबर, दसरा–दिवाळी , १९९० पृ. ७०६)

अर्थात भाई ने दिलवाई हुई इस बेशकीमती साड़ी पर गंगा जमनी संस्कृति का असर है। और दोनों ही संस्कृति के कारीगरों की बेहतरीन कला का यह उदाहरण है। इस बात को जाने अनजाने में इन पंक्तियों में गाया है। दो धर्म संस्कृतिके आपसी मिलाप को सहजता से लेने वाली यह स्त्रियां गंगाजमनी शब्दों का उपयोग कर जीवन का बड़ा तत्वज्ञान समझा जाती है। मानवता का धर्म सबसे बड़ा है। मानव जीवन अनमोल होता है। उसे नफरतों में बहकर बर्बाद नहीं किया जा सकता। इसीलिए शायद गणपति की स्तुति में गाए जाने भजन में अष्ट भैरव, योगिनी, गण इनके साथ साथ पीर पैगंबरों को भी उल्लेखित किया गया है। पीर पैगंबर का इस्लाम धर्म में ऊंचा स्थान रखते हैं।

मोरया गणपती रे गणराजा किती विनवू तुला महाराजा
अष्टभैरव सिंधू सोळा,चौसष्ट योगिनीचा मेळा
गण शंभर कोटी जमले
माझ्या अंगणी येऊन गमले, पीर पैगंबर हे रमले
गाऊ नाम लावू ध्वजा,किती विनवू तुला महाराजा
(बाबर, श्रावण–भाद्रपद , १९८५ पृ.७१९)

गंगाजमनी संस्कृति के संदर्भ में ऐसे ही कुछ विचार मराठी मुस्लिम ओवी में भी नजर आते हैं।

गंगा और जमुना दोनों है सग्या बहना
गंगाबाईउतावळी जमुना का धीरे जाना
(जगदाळे, पृ. ३६०)

गंगा और जमनी दोनों ही हिमालय से निकलती है, इसीलिए सगी बहनें है। फरक केवल दोनों के प्रवाह की गति में है। वैसे ही हिंदू और मुसलमान अलग–अलग धर्म संस्कृति है। उनके आराध्य, पूजा पाठ के तरीके, मान्यताएं, धारणा भिन्न–भिन्न है। किंतु मानवता का संबंध इन सबसे ऊपर है। जो इंसान को सामुदायिक साहचर्य की भावना सिखाता है।यही तात्विक विचार दोनों ही गीतों में प्रदर्शित होते हैं। इस गंगाजमनी संस्कृति के सांप्रदायिक सद्भाव को अपने गीतों में स्त्रियों ने श्रद्धा से गाया है। आने वाली पीढ़ियों के लिए इस मौखिक लोकसाहित्य की परंपरा को संजोया है। सहजता से मानवी जीवन के अनमोल

होने की शिक्षा देते हुए यह मराठी मिट्टी की बेटियां कहती है,

एकनाथ कुलकर्णी मौलाना देशपांडे
दोघांची वाणी एक गोदेचे पाणी एक
(ब्रम्हानंद देशपांडे संग्रह)

अर्थात साधु संत हिंदू या मुसलमान किसी भी धर्म के हो उनकी वाणी से निकलने वाला सत्य एक ही होता है ।मानव धर्म सबसे महान यह समझाने वाला चाहे एकनाथ हो या कोई मौलाना हो। नाम, मजहब, भाषा भले ही भिन्न–भिन्न हो, उनके शब्दों का अर्थ एक समान ही होता है। जैसे हमारी पवित्र गोदामाई का पानी कहीं से भी देखो एक समान बहता नजर आता है।गंगाजमनी संस्कृति पर ऐसे मार्मिक विचार, स्त्रियों की केवल रचना की उंचिश्रेणी ही नहीं दिखाते हैं,उनके समग्र जीवन का सार भी समझने में मदद करते हैं। सर्वसाधारण जनों का आपस का भाईचारा, एक दूसरे के धर्म के प्रति आदर, सांस्कृतिक प्रभाव,प्रथा–परंपराओं का जाने अनजाने में एक दूसरे सेमिलाफ समझने में यह मौखिक परंपरा निश्चित ही उपयोगी है।

मूल्यांकन

महाराष्ट्र के लोकगीतों में स्त्रीगीतों का एक विशिष्ट स्थान है। इन गीतों में स्त्री जीवन के हर एक पहलू पर गीत रचना की गई है।जिसमें स्त्रियों का पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक जीवन समझने को मदद होती है।इन गीतों से कुछ अध्यात्मिक और ऐतिहासिक पहलू भी सामने आते हैं। इन स्त्री गीतों में दिखने वाली गंगाजमनी संस्कृति विशेष उल्लेखनीय है।इससे महाराष्ट्र में सदियों से चलती आ रही सामुदायिक सद्भावना और भाईचारे की मिसाल मिलती है। यह लोकसंस्कृति लोकगीतों द्वारा शांतिपूर्ण सहजीवन, धार्मिक सहिष्णुता की सीख देती है। मराठी लोक गीतों की रचना करने वाली अशिक्षित स्त्रियों की प्रगल्भ विचारधारा इस गंगाजमनी संस्कृति का मान रखती दिखाई देती है। शायद बड़े–बड़े विद्वान पंडितों को,मुल्ला–मौलवी को कठिन अध्ययन के बाद जिस ज्ञान की प्राप्ति होती है, उस ज्ञान को इन साधारण औरतों ने अपने अनुभव से ग्रहण किया और उसका उपयोग भी किया है। राजनितिक गलियारों में, ऊंचे घरानों में,शहरी बस्तियों में शायद धार्मिक भेदभाव, वैचारिक द्वंद्व आम हो सकते हैं किंतु लोकसंस्कृति में सर्वसाधारण जनता आपसी तालमेल और सांप्रदायिक सहिष्णुता पर जोर देती हुई दिखाई देती है। मराठी लोकगीतों में यह स्त्री गीत सामुदायिक सद्भावना और गंगाजमनी संस्कृति का बेमिसाल प्रमाण देते हैं। महाराष्ट्र की यह मौखिक परंपरा ऐतिहासिक, राजनितिक, सामाजिक, धार्मिक,सांस्कृतिक पार्श्वभूमी और दृष्टिकोण को समझने में मदद करती है।

सन्दर्भ सूची

1. Foundation, T-(२०२०). स्त्रीधन – भोंडला (हातगा). htts:/www.transliteral-org/31 August2018.
2. इंगोले, क. (२००४). लोकसंस्कृतीतील स्त्रीरूपे. मुंबई: महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संकृती मंडळ.
3. जगदाळे, क. (२००४). मराठी मुस्लीम ओव्या ७८६. बार्शी : नारायण जगदाळे.
4. बाबर, स. (१९९०). दसरा–दिवाळी . पुणे: महारष्ट्र लोकसाहित्य माला.
5. बाबर, स. (१९७३). मराठीतील स्त्री स्त्रीधन. मुंबई: प्रसिद्धी संचनालय महाराष्ट्र शासन.
6. बाबर, स. (१९८५). श्रावण–भाद्रपद . मुंबई: महाराष्ट्र राज्य शिक्षण समिती .
7. ब्रम्हानंद देशपांडे संग्रह .
8. भोसले(संपा.), द. त. (२००५). लोक जीवन आणि लोक संस्कृती. मुंबई: महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळ.
9. सानेगुरुजी. (२०११). स्त्री जीवन. कोल्हापूर: रिया पब्लिकेशन.